जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अगस्त 2021 ।। अंक – 13 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

सब्जी की खेती से सुधरी परिवार की आर्थिक स्थिति (पृष्ठ – 02)

पौधारोपण से समृद्धि की ओर (पृष्ठ – 03)

सही तकनीक से लगाएं पौधे, तभी फलेंगे फल और फैलेगी हरियाली (पृष्ठ – 04)

कृषि क्षेत्र में नवाचार से बदल रही दीदियों की जिंदगी

कृषि क्षेत्र बिहार की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है जो राज्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। जीविका अपने आरम्भ से लक्षित समूह के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है। महिलाओं के आर्थिक विकास के लिए जीविका द्वारा कृषि, गैर–कृषि, पशुपालन आदि गतिविधियों का सफल संचालन किया जा रहा है। कृषि क्षेत्र में जीविका के नवाचारों ने कई परिणाम दिये हैं। जीविका से जुड़े किसान परिवारों की कृषि पैदावार को बढ़ाने हेतु भी निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। जीविका से जुड़ी महिला कृषकों को तकनीकी तौर पर दक्ष कर बेहतर भविष्य का निर्माण किया जा रहा है। जीविका किसानों को मृदा जांच, फसल कटाई के बाद नुकसान को कम करने के लिए भंडारण, खाद्य प्रसंस्करण के माध्यम से मूल्य संवर्धन, कृषि बाजार की स्थापना, फसल बीमा सहित विभिन्न गतिविधियों से जोड़कर उनकी आय में वृद्धि कर रही है। इसके अतिरिक्त जीविका जैविक खेती को बढ़ावा देकर सुरक्षित, सेहतमंद और लाभप्रद कृषि को भी प्रोत्साहित कर रही है। जीविका के प्रयासों का परिणाम है कि कृषि कार्यों में महिलाओं की अधिक भागीदारी से उत्पादन में वृद्धि हो रही है और ग्रामीण आजीविका में सुधार आया है।

नई तकनीक के माध्यम से उन्नत खेती करने से उत्पादन बढ़ा है। जीविका दीदियों द्वारा वर्ष 2009 में ही श्रीविधि तकनीक अपनायी गयी। इस विधि से कम लागत और मेहनत में बेहतर उत्पादन हो रहा है। जीविका समय–समय पर प्रदान, कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विभाग और आत्मा जैसी संस्थाओं की मदद से किसानों को बेहतर पैदावार के गुण सिखाती है। साथ ही, जीविका ने किसानों की आमदनी को बढ़ाने के लिए सब्जियों के उत्पादन में भी वैज्ञानिक तरीकों का प्रयोग करके किसानों को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने का सफल प्रयोग किया है। किसानों को मौसम के अनुकूल सब्जियों के उत्पादन के गुर बताये गए जिसका व्यापक असर पड़ा। तकनीक आधारित खेती किसानों के लिए वरदान साबित हुई है।

गरीब परिवारों के लिए कम जमीन से पूरे परिवार का पोषण युक्त भोजन का सपना किचेन गार्डेन द्वारा पूरा किया जा रहा है। केवल बीस बर्ग फीट के आयताकार खेत में रोजाना प्रयोग होने वाली सब्जियों का उत्पादन दीदियों के लिए काफी लाभप्रद साबित हो रहा है। भिंडी, करेला, तोरई, मिर्ची, टमाटर, साग जैसी कई सब्जियों का पूरे वर्ष न्यूनतम खर्च पर उत्पादन हो रहा है जिसकी वजह से गर्भवती महिलाओं और बच्चों को रोजाना हरी एवं पोषणयुक्त सब्जियां मिल रही हैं। कम मेहनत और अल्प लागत होने की वजह से किचेन गार्डेन जीविका दीदियों में लोकप्रिय है।

किसानों के उत्पादों को बेहतर बाजार मूल्य के लिए जीविका में उत्पादक समूहों का संचालन किया जा रहा है। उत्पादक समूह स्वप्रबंधित व्यवसायिक संगठन हैं जिनसे जुड़े सदस्य उत्पादकता, बाजार संबद्धता का कार्य समूह के माध्यम से करते हैं। इसका उद्देश्य किसानों के उत्पाद का उचित मूल्य विपणन के माध्यम से दिलाना है। फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी द्वारा भी जीविका ने कई अनुकरणीय कार्य किये हैं। सलेक्क, मिश्रित खेती, कृषि यंत्र बैंक आदि द्वारा भी कृषि गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

सशक्तीकरण, आत्मनिर्भरता एवं स्वरोजगार की ओर बढ़ते कदम

गोर्गोन नट या फॉक्स नट, जिसे आमतौर पर मखाना के नाम से जाना जाता है कि खेती मुख्य रूप से बिहार, पश्चिम बंगाल और असम राज्यों में की जाती है। बिहार के मधुबनी, दरभंगा, सीतामढ़ी, सहरसा, कटिहार, पूर्णिया, सुपौल, किशनगंज और अररिया जिले राज्य में मखाना के प्रमुख उत्पादक जिले हैं।

मक्का दुनिया भर के अन्य सभी अनाजों में सबसे अधिक उगाने वाला अनाज है, खासकर भारत में चावल और गेहूं के उत्पादन के बाद। भारत में, प्रमुख मक्का उत्पादक राज्य कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश हैं। बिहार के पूर्वी भाग अर्थात् पूर्णिया, कटिहार, सहरसा अररिया, खगड़िया, जिलों की भौगोलिक स्थिति और जलवायु स्थिति रबी मक्का की खेती के लिए अनुकूल है।

कृषि क्षेत्र में महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण, आत्मनिर्भरता एवं स्वरोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। पूर्व में किसान दीदियो को सही जानकारी एवं जागरूकता के अभाव में मक्का का सारे उपज बिचौलिये द्वारा खरीद ली जाती थी। किसान दीदियों को सही दाम भी नहीं मिल पाती थी। बिचौलियों द्वारा भुगतान एक में बार न कर, कई किस्तों में किया जाता था।

ऐसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए, कटिहार में कटिहार जीविका महिला किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड का गठन किया गया हैं। इस कंपनी का उद्देश्य है जीविका दीदियों द्वारा उत्पादित मक्का एवं मखाना का सही बाजार उपलब्ध करवाना और ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाना। कटिहार में बड़ी मात्रा में मखाना एवं मक्का की खेती की जाती है लेकिन सही दाम नहीं मिलने के कारण किसानों को भारी नुकसान का सामना करना पड़ता था। जीविका दीदियों की यह कंपनी किसानों को इस नुकसान से छुटकारा देने हेतु एक अहम पहल है।

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS
Central Registration Centre

Certificate of Incorporation

[Pursuant to sub-section (2) of section 7 and sub-section (1) of section 8 of the Companies Act, 2013 (18 of 2013) and rule 18 of the Companies (Incorporation) Rules, 2014]

I hereby certify that KATIHAR JEEVIKA MAHILA KISAN PRODUCER COMPANY LIMITED is incorporated on this Fifteenth day of July Two thousand twenty-one under the Companies Act, 2013 (18 of 2013) and that the company is limited by shares.

The Corporate Identity Number of the company is U01110BR2021PTC052929.

The Permanent Account Number (PAN) of the company is AAICK8945R *

The Tax Deduction and Collection Account Number (TAN) of the company is PTNK03143A *

Given under my hand at Manesar this Fifteenth day of July Two thousand twenty-one .

Digital Signature Certificate
Shri VIKRAM SINGH

For and on behalf of the Jurisdictional Registrar of Companies
Registrar of Companies
Central Registration Centre

Disclaimer: This certificate only evidences incorporation of the company on the basis of documents and declarations of the applicant(s). This certificate is neither a license nor permission to conduct business or solicit deposits or funds from public. Permission of sector regulator is necessary wherever required. Registration status and other details of the company can be verified on www.mca.gov.in

Mailing Address as per record available in Registrar of Companies office:
KATIHAR JEEVIKA MAHILA KISAN PRODUCER COMPANY LIMITED
District Project Coordination Unit, Barmasia, Near P&T Chowk,Manihari Road, KATIHAR, Katihar, Bihar, India, 854105

* as issued by the Income Tax Department

सब्जी की खेती से सुधरी परिवार की आर्थिक स्थिति

पूर्णियाँ जिला के भवानीपुर प्रखंड अंतर्गत बसंतपुर चिंतामणि उस्कावरी पंचायत के चाय टोला गाँव में संजीला देवी अपने परिवार के साथ निवास करती है। संजीला देवी के परिवार में उनके पति, दो बेटी और एक बेटा हैं। उनके परिवार के पास के 20 कट्ठा जमीन है। इतनी ही जमीन पर खेती से होने वाली आमदनी से परिवार का भरण–पोषण ठीक से नहीं हो पाता था।

27 दिसम्बर 2010 को संजिला देवी बजरंगबली जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयी। वह समूह के नियमित साप्ताहिक बैठक में भाग लेकर बचत करने लगी। कुछ समय बाद खुद को साहूकार के चंगुल से बाहर निकलने को अपनी प्राथमिकता में शामिल करते हुए उसने जीविका समूह से कम ब्याज दर पर ऋण लेकर सब्जी की खेती करने का निर्णय कर लिया था। गाँव के कई किसानों को परवल की खेती से हो रहे अच्छे मुनाफे को देखकर उसे भी परवल की खेती करने की इच्छा हुई। वर्ष 2018 में अपने समूह से 10000 रुपये ऋण लेकर 13 कट्ठे जमीन पर उसने परवल की खेती शुरु कर दी एवं शेष 7 कट्ठा जमीन पर अन्य सब्जियाँ उपजाने लगी। संजीला देवी परवल को तोड़कर अपने ही गाँव चाय टोला में सब्जी मंडी में बेचती हैं। संजीला देवी देशी और हाइब्रिड दोनों तरह के परवल की खेती करती हैं। संजीला देवी अपने खेत से हर सप्ताह औसतन 20 से 30 किलोग्राम परवल तोड़कर बेचती है। परवल की कीमत हर सीजन में घटता–बढ़ता रहता है। औसतन थोक भाव में 25 रुपये से 50 रुपये के बीच चाय टोला गाँव की सब्जी मंडी में बिक जाता है। वह परवल की खेती से साल भर में औसतन 40000 रुपये एवं अन्य सब्जियों से औसतन 10000 रुपये कमा लेती है। परवल एवं अन्य सब्जी की खेती से संजीला देवी की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है।

पौधारोपण से समृद्धि की ओर

जीविका की सहायता से नर्सरी के तहत किये गए पौधारोपण से सैकड़ों परिवार आर्थिक समृद्धि की ओर अग्रसर हैं। उन्ही में से हैं बक्सर जिले के ब्रहमपुर प्रखंड स्थित जोगियाँ पंचायत के गरहत्था गाँव की कंचन देवी। कंचन देवी काली जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं और इनका समूह प्रकाश जीविका महिला ग्राम संगठन से संबद्ध है। कंचन देवी नर्सरी के साथ पौधारोपण और उससे उत्पादित फलों की कारोबारी बन गई हैं। प्रतिवर्ष ये तीन लाख रुपये से ज्यादा मूल्य के पौधे वन विभाग को बेचती हैं। फलदार वृक्षों को इन्होने उपने खेत में लगाया और काष्ठीय पौधे थोड़े बड़े होने पर बेचकर मुनाफा कमा रही हैं। साथ ही फलदार वृक्षों से भी मुनाफा कमाने लगी हैं। पपीता, अमरुद और आम और इनपर लत्तर वाले सब्जियों की खेती से उत्पादित सब्जियां बेचकर वे आर्थिक समृद्धि की ओर अग्रसर हैं। चार वर्ष पूर्व कंचन देवी ने अपने खेत में लगभग 200 फलदार और काष्ठीय पौधे से नर्सरी की शुरुआत की। कंचन की नर्सरी और उसके पौधारोपण कार्य को मनरेगा एवं वन विभाग का सहयोग प्राप्त है। नर्सरी के माध्यम से पौधारोपण कर वे आज पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा रही हैं और गाँव–समाज की अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनी हुई हैं। इनकी नर्सरी से पिछले साल लगभग डेढ़ लाख पौधा वन विभाग ने भी खरीदा था। अगर देखा जाए तो प्रति माह कंचन पौधारोपण से लगभग दस हजार रूपया प्रतिमाह शुद्ध मुनाफा कमा रही है। वन विभाग द्वारा खरीदे गए पौधे जल जीवन हरियाली अभियान के तहत जीविका दीदियों द्वारा ही सड़क के किनारे और उनके घरों के आस–पास लगाए गए। यह प्रक्रिया अभी भी जारी है। पौधों की उचित देख–भाल के गुर भी कंचन जीविका दीदियों को बताती हैं। कंचन के पति शशि भूषण इनकी तरक्की से काफी खुश है। कंचन बताती हैं कि पारंपरिक खेती से अलग फलों के उत्पादन से उन्हें ज्यादा मुनाफा तो हो रहा है साथ ही पर्यावरण संतुलन और जल जीवन हरियाली अभियान भी सफल हो रहा है।

पर्यावरण संरक्षण के साथ आर्थिक सशक्तीकरण की तरफ बढ़े कदम

धरती पर घट रही हरियाली के कारण पर्यावरण में असंतुलन लगातार बढ़ रहा है। इसको कम करने के लिए, हरियाली के प्रति लोगों को जागरूक करने और बढ़ावा देने के लिए बिहार सरकार ने 'मुख्यमंत्री निजी पौधशाला योजना' का आरंभ किया। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के इस कार्यक्रम ने समस्तीपुर जिला के पुसा प्रखंड के चंदौली की रीना पटेल के जीवन को पूरी तरह बदल दिया है।

जीविका से जुड़ी रीना पटेल की अपनी अलग पहचान है। रीना पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के सहयोग से दीदी की नर्सरी का संचालन सफलता पूर्वक कर रही हैं।

जीविका के प्रयासों के बाद रीना पटेल को मुख्यमंत्री निजी पौधशाला के अंतर्गत दीदी की नर्सरी के संचालन का मौका मिला। जब रीना पटेल ने दीदी की नर्सरी के संचालन का कार्य आरंभ किया तो परदेश रह रहे अपने पति को भी वापस बुला लिया। अब रीना पटेल पति कुमोद कुमार पटेल के सहयोग से कार्यों को बेहतर तरीके से कर रही हैं। उसने विभाग के सहयोग से अक्टूबर 2019 में कार्य आरंभ किया। कार्य आरंभ करने के दौरान ही विभाग द्वारा उसे प्रशिक्षण भी दिया गया।

रीना कहती हैं कि – 'पहली बार 2020 में साढ़े चार कट्ठे के प्लाट को पहले मैंने नर्सरी के लिए तैयार किया जिसका निरीक्षण विभाग के अधिकारियों द्वारा किया गया। फिर उसमें मैंने बीस हजार पौधे लगाये जिनमें मुख्यतः महोगनी, सागवान, अर्जून, गम्हार आदि था। विभाग द्वारा रीना की नर्सरी से करीब 17 हजार पौधे खरीदे गये।' दूसरी बार भी 2021 में रीना पटेल द्वारा दीदी की नर्सरी में 20 हजार पौधों का रोपण किया गया है। विभाग द्वारा इसकी भी खरीद की तैयारी की जा रही है। रीना बताती हैं कि उन्हें इस कार्य से पर्याप्त आर्थिक लाभ मिला है। साथ ही पर्यावरण के संरक्षण का लक्ष्य भी हासिल करना संभव हो पाया है।

पौधारोपण तकनीक

सही तकनीक से लगाएं पौधे, तभी फलेंगे फल और फैलेगी हरियाली

पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन एवं वन क्षेत्र में वृद्धि के लिए बिहार सरकार द्वारा चलाए जा रहे अभियान में जीविका दीदियां कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। 'मिशन 5 करोड़ पौधारोपण अभियान' के तहत जीविका द्वारा 'हरित जीविका हरित बिहार 1.5' कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत पर्यावरण दिवस–5 जून से पृथ्वी दिवस– 9 अगस्त तक जीविका दीदियों द्वारा सघन वृक्षारोपण किया जा रहा है। इस अवधि में 'एक दीदी–एक पौधा' के माध्यम से 1.5 करोड़ पौधारोपण करने का लक्ष्य है। यह अभियान से पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ परिवार की पोषण संबंधी जरूरतों एवं अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम साबित होगा।

जीविका दीदियां सही तरीके से पौधारोपण कर उसका उचित देखभाल करे, इसके लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जा रहा है। सही तकनीक से पौधा लगाने से ही पौधे जीवित रहेंगे और और बड़े होंगे। तभी वृक्षारोपण के मकसद को पूरा किया जा सकेगा। पौधारोपण तकनीक के बारे में आवश्यक जानकारियां निम्न है:–

1. **स्थल चयन:** वृक्षारोपण हेतु स्थल का चयन एक महत्त्वपूर्ण अवयव है। जल जमाव वाला क्षेत्र नहीं होना चाहिए। ऐसी जगह का चयन करना चाहिए जहां पौधा लगाने के बाद उसकी देखरेख अच्छी तरह की जा सके। सामान्यत: सड़क एवं नहर–नदी के किनारे, स्कूल–कॉलेज या अन्य संस्थानों के परिसर, किसानों की परती जमीन या खेत का मेढ़, घर के पिछवाड़े में या घर के आगे खाली जमीन में पेड़ लगाए जा सकते हैं।

2. **गड्ढे की खुदाई:** स्थल चयन के उपरान्त पौधे लगाने हेतु गड्ढे की खुदाई की जाती है। गड्ढे की खुदाई फरवरी–मार्च महीने में ही कर लेनी चाहिए। ध्यान रखना चाहिए कि खोदे गए गड्ढे में सूर्य का प्रकाश आसानी से पहुंचे। खोदे गए गड्ढे एवं इसकी मिट्टी में कम से कम एक माह तक सूर्य का प्रकाश लगाना चाहिए। इससे गड्ढे में फुफूंद नहीं लगेगा। फलदार वृक्षों के लिए 2 फीट लम्बा, 2 फीट गहरा एवं 2 फीट चौड़े गड्ढे की खुदाई होनी चाहिए, जिससे उसकी जड़ों का फैलाव अच्छी तरह हो सके। वहीं काष्ठीय पौधों के लिए गड्ढे का आकार 1 फीट लंबा, 1 फीट चौड़ा एवं 1 फीट गहरा होना चाहिए। काष्ठीय पौधे से पौधे की दूरी 8 से 10 फीट होनी चाहिए। वहीं फलदार वृक्षों के लिए यह दूरी 10 से 25 फीट के बीच होनी चाहिए। वृक्ष से वृक्ष के बीच की दूरी कम होने पर इसकी वृद्धि कम होती है।

3. **गड्ढे की तैयारी:** पौधारोपण के पूर्व खोदे गए गड्ढे को अच्छी तरह तैयार कर लेना जरूरी है। इसके लिए गड्ढे के किनारे पड़ी मिट्टी को अच्छी तरह चूर कर किया जाता है। मिट्टी यदि दोमट नहीं हो तो गिली बालू मिला लेना चाहिए। दोमट मिट्टी में बालू मिलाने की आवश्यकता नहीं। इसके बाद मिट्टी के बराबर हिस्से में वर्मी कम्पोस्ट या गोबर की सड़ी हुई खाद मिलाया गया। इस मिश्रण में थोड़ा गमेक्सिन पाउडर डाला जाता है जिससे फुफूंद का प्रकोप कम हो सके।

4. **पौधे की रोपाई:** पौधों की रोपाई आमतौर पर बारिश के मौसम में की जाती है। तैयार गड्ढे में पौधों की रोपाई के समय यह सावधानी आवश्यक है कि ट्यूब का ऊपरी सतह जमीन के बराबर हो। इसलिए यदि आवश्यक हो तो गड्ढे की गहराई को पहले से तैयार मिट्टी से आधा भर देते हैं। थैली में उगाए गए पौधों को हाथ पर रखकर उसके पॉलीथिन को ब्लेड या चाकू की सहायता से काटते हैं और सावधानीपूर्वक उसे अलग कर देते हैं। इसके बाद शिशु पौधे को गड्ढे के बीच में सीधी रखकर उसमें मिश्रित मिट्टी भर देते हैं और धीरे–धीरे मिट्टी को दबाते है। यदि अत्यधिक बारिश का मौसम हो तो तना के पास ज्यादा मिट्टी देकर उसे ऊंचा रखते हैं वहीं कम बारिश की स्थिति में पौधे के तना के पास हल्का गड्ढा रखते हैं, जिससे शिशु पौधे की जड़ों के पास हमेशा पर्याप्त नमी बनी रहे।

5. **पौधों का रखरखाव:** पौधारोपण के 10 से 15 दिनों बाद कोड़नी–निकौनी होनी चाहिए। निराई–गुड़ाई की यह प्रक्रिया पुन: एक से डेढ़ माह बाद दोहरानी चाहिए। तीसरी बार निराई–गुड़ाई करीब ढाई महीने बाद करनी चाहिए। निराई–गुड़ाई के बाद पौधे से करीब 10 सेमी की दूरी पर एक रिंग बना कर उसमें डीएपी एवं यूरिया खाद डालकर उसे मिट्टी से ढक दें। इसके बाद उसमें पानी डालें। 3–4 दिन के अंतराल पर पौधे की सिंचाई करनी चाहिए। यदि बारिश का मौसम हो तो पटवन की आवश्यकता नहीं है।

6. **पौधों का सुरक्षा घेरा:** पौधों की देखभाल के लिए इसके चारों ओर घेरा बनाया जाना चाहिए। घरेलू स्तर पर उपलब्ध कांटों, लकड़ियों, बांस या कँटीले तारों से घेरा बनाकर पौधों को जानवरों द्वारा चरे जाने से बचाया जा सकता है।

इस प्रकार पौधों की उचित देखभाल एवं रखरखाव से ही पौधों को सुरक्षित रखकर बड़ा किया जा सकता है। इन तकनीकों द्वारा फल और हरियाली प्राप्त की जा सकती है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्री ब्रज किशोर पाठक – विशेष कार्य पदाधिकारी
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णिया
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर